# * तृतीय अध्याय *

## : तृतीय अध्याय :

## धर्मवीर भारती के उपन्यासों का कथ्य।

कथानक उपन्यास का मूल तत्त्व है। उपन्यास का भवन कथानक की नींव पर ही खड़ा होता है। उपन्यासकार किसी महत्त्वपूर्ण विषय और उद्देश्य को लेकर कथानक का निर्माण करता है। मौलिकता, रोचक घटनाओं का निर्माण, कौशल, सत्यता और स्वाभाविकता उपन्यास की कथावस्तु के गुण माने जाते हैं। कथानक का चुनाव और निर्माण उपन्यासकार की प्रमुख विजय है। उपन्यास का कथानक सुगठित और ठोस हो तो वह उतनाही महत्त्वपूर्ण बन सकता है। कथानक के बारे में डा.प्रतापनारायण टंड़न जी कहते हैं - "वास्तव में उपन्यासों के तत्वों में कथानक की प्रधानता का कारण यही है कि इसके अभाव में न केवल उपन्यास की रचना नहीं हो सकती, बल्कि उपन्यास एक कथा-कृति ही नहीं बन सकता।"[१]

### कथ्य का महत्व :-

उपन्यास में लेखक जीवन का यथार्थ चित्रण उपस्थित करता है, जो उसके अपने अनुभवों पर आधारित होता है। जीवन की झाँकी देकर आदर्श की स्थापना करना उपन्यास का कथ्य होता है। एक युग और समाज के जीवन को प्रेरणा देने का काम भी उपन्यास का ही है। उपन्यासकार मनोरंजन के साथ ही अपनी रचना में स्त्री-पुरूष, उनके सबन्धों, विचारें, भावनाओं, अन्तःवर्णो, सुख-दुःख, संघर्ष, सफलता-असफलता आदि का चित्रण करता है। उपन्यास का कथ्य यह भी हो सकता है कि उसके माध्यम से पाठक को किसी न किसी प्रकार का उपदेश दिया जा सके। तथा समाज में सुधार हो सकता है। इसीलिए उपन्यास में कथ्य बहुत महत्त्वपूर्ण है।

### धर्मवीर भारती के उपन्यासों में कथ्य :-

धर्मवीर भारती जी ने कथ्य और शिल्प का प्रयोग अपने उपन्यासों में सफलतापूर्वक किया है। भारती जी के दोनों उपन्यासों की मूल संवेदना "प्रेम" है। नर-नारी

के प्रेम-सम्बन्धों को विभिन्न दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना उपन्यासों का कथ्य है। दोनों उपन्यासों में मध्यवर्ग के आधारपर प्रेम और विकृति को चित्रित किया है। "गुनाहों का देवता" मध्यवर्गीय जीवन की यथार्थता, मूल्य-संकट, पारिवारिक संत्रास, मानसिक ऊहापोह आदि का दिग्दर्शन कराता है, तो "सूरज का सातवाँ घोडा" नवीन शैली में नये धरातल की सूचना देता है।" वस्तुतः दोनों उपन्यासों में भारती का भावुक प्रयोगधर्मी रूप दिखाई देता है।

क) "गुनाहों का देवता"।

"गुनाहों का देवता" धर्मवीर भारती की पहली औपन्यासिक कृति है। इस उपन्यास में भारती ने मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं का अलग ढ़ंग से विवरण किया है। इस उपन्यास के सभी पात्र मानसिक स्थिति से पीड़ित हैं। उनको मानसिक शांति नहीं प्राप्त होती है, इसलिए वे मानसिक शांति की खोज में भटकते हुए दिखायी देते हैं। इसमें लेखक, पुरूष और स्त्री के परस्पर सम्बन्धों को परखने का उपक्रम करते हैं। इसमें पुरूष स्वभाव की विभिन्नता कम और नारी स्वभाव कि विविधता अधिक दिखाई देती है।

धर्मवीर भारती का यह उपन्यास मानसिक द्वन्द्व का उपन्यास है। चन्दर, सुधा, डा.शुक्ला, बिनती, पम्मी, गेसू, बर्टी आदि के जीवन में आये तुफानों की समस्याओं को धर्मवीर भारती जी ने समेटकर चार सौ पन्नों में बाँधने का प्रयास किया है। सभी पात्र भावनाओं के द्वन्द्व में किस तरह फँस जाते हैं और किस तरह अपना जीवन मुश्कील से जीते हैं। इसका सुंदर ढ़ग से विवरण भारती ने किया है।

इस उपन्यास में एक मुख्य कथानक है और बाकी गौण कथाएँ बीच-बीच में आकर मुख्य कथा को सहयोग देती हैं। इनमें से कुछ गौण कथाएँ अंत तक साथ चलती हैं तो कुछ बीच में शुरू होकर बीच में ही विलीन हो जाती हैं। मुख्य कथा का संबंध सुधा तथा चन्दर के चरित्र से संबंधित है।

"गुनाहों का देवता" उपन्यास का नायक चंद्रकुमार कपुर है। चंद्रकुमार कपुर एक मेधावी छात्र है। जिसकी उच्च्व शिक्षा एवं रहने-खाने की व्यवस्था सुधा के पिता डा.शुक्ला ने की है। सुधा डा.शुक्ला की इकलौती बेटी है। उसकी सातवीं कक्षा तक की पढ़ाई गाँव

में अपनी बुआ के पास होती है। आगे की शिक्षा के लिए सुधा को डा.शुक्ला अपने पास लाते हैं, तब से वह चन्दर के स्नेह-शासन में रहती है। इसी कारण चन्दर और सुधा में स्नेह एवं अपनापन बढ़ता है। चन्दर के साथ हँसते-खेलते, लड़ते-झगड़ते, रीझते-खीझते उसके दिन बीत जाते हैं। उपन्यासकार ने आरंभ से ही चन्दर और सुधा की आत्मीयता दिखलाई है। जहाँ पुस्तकालय से पुस्तक लेकर जाने से इसका प्रारंभ है। दोनों एक दूसरे को बहुत प्यार करते हैं। एक-दूसरे के साथ उठते-बैंठते हैं, हँसी-मजाक उड़ाते हैं। एक-दूसरे की गलतियों पर ताने कसते हैं।

चन्दर कपुर जो अपने माता से झगड़कर प्रयाग आया है जिसे डा.शुक्ला ने अपनाया है। चन्दर मेधावी छात्र होने के कारण डा.शुक्ला उसे बहुत मानते हैं। चन्दर की सज्जनता, नम्रता एवं शिष्टता उसे डा.शुक्ला के परिवार का भी प्रिय बना देती है। बदले में चन्दर डा.शुक्ला जी की इकलौती लाड़ली बेटी सुधा को भी अगाध श्रद्धा एवं स्नेह देता है। चन्दर बी.ए.में विश्वविद्यालय में प्रथम आता है और एम.ए. में उसे इकनॉमिक्स विभाग ने विश्वविद्यालय के आर्थिक प्रकाशनों का वैतानिक संपादक बना दिया है। एम.ए. में सर्वप्रथम आने के बाद वह रिसर्च शुरू करता है। चन्दर के शिक्षा का पूरा खर्च डा.शुक्ला उठाते हैं।

जब सुधा गाँव से आयी, तब बहुत भोली सी लगती है। वह चन्दर से बहुत ड़रती है, तो वह कभी कभी चन्दर के इशारे से ही चुप हो जाती है। कभी इतनी ढ़ीठ बनती है कि चन्दर उसे चाहे जितना चिढ़ाए, वह भी उसे चिढ़ाती है और एक दूसरे के सहयोगियों पर ताने कसते हैं - "चन्दर ने उसकी हेड़मिस्ट्रेस का नाम एलीफैण्टा (श्रीमती हथिनी) रखा है,...... या चन्दर कहता है कि सुधा कि सखियाँ कोयला बेचती हैं।"[३] चन्दर उसे हमेशा कुछ न कुछ चिढ़ाता रहता है और वह उससे नाराज होकर भी उसकी हर बात मानती है।

सुधा का बचपन का उनका यह स्नेह बड़ी होने पर उनके अनुराग के रंग में रंग ड़ालता है और दोनों परस्पर एक-दूसरे को प्रेम करने लगते हैं। उनका यह प्रेम सर्वथा पवित्र है। - "वे दोनो लड़ते-झगड़ते, हँसते-खेलते, दो तन एक मन हो जाते हैं। उनका

13275
A

यह अनुराग इतना सहज, स्वाभाविक और अनायास रूप में अंकुरित और विकसित होता है कि वे एक-दूसरे के व्यक्तित्व में रंग जाते हैं और उन्हें यह पता भी नहीं चलता कि एक पुनीत आदर्श, स्नेह के पवित्र रूप गरिमा से चन्दर अपने व्यक्तित्व को गौरवान्वित अनुभव करता है। वह सुधा का आदर्श पूज्य देवता बनता है।"[४] सुधा पर उसके पापा जितना प्यार उँड़ेलते हैं। उतना सुधा भी चन्दर पर प्यार करती है। वह चंदर के खाने-पिने तक का खयाल रखती है। सुधा चंदर के स्वास्थ्य का यहाँ तक ध्यान रखती है कि उसके चाय माँगने पर दूध में सिर्फ दो-चार बुँद ही चाय ड़ालती है और वही दुधिया चाय उसे पिलाने देती है। इतना वह चन्दर का खयाल करती है।

कुछ दिनों के बाद सुधा की बुआ तथा बिनती उनके पास रहने के लिए आ जाते हैं। बुआ चाहती है कि बिनती के विवाह से पूर्व ही सुधा का विवाह कर लिया जाय। कॉमरेड कैलाश मिश्र के साथ सुधा की शादी हो जाती है, जिसने मुसीबत के समय डा.शुक्ला तथा चन्दर की रक्षा की थी। इसी समय सुधा विवाह का विरोध करती है। चन्दर उसे विवाह के लिए तैयार करना चाहता है - तो वह कहती है - "मैं जानती हूँ कि मैं तुम्हारे लिए राखी के सूत से भी ज्यादा पवित्र रहीं हूँ लेकिन मैं जेसी हूँ मुझे वैसी ही क्यों नहीं रहने देते। मैं किसी से शादी नहीं करूँगी। मैं पापा के पास रहुँगी, शादी को मेरा मन नहीं कहता मैं क्यों करूँ?"[५]

अंत में डा.शुक्ला के सम्मान और चन्दर के आग्रह के कारण वह विवाह करने के लिए राजी हो जाती है। लेकिन सुधा की शादी निश्चित होनेपर चन्दर, सुधा दोनों भी टूट जाते हैं। घर जाकर भी चन्दर ठीक नहीं होता। दिन-रात वह उदास बैठा करता है। अपने घर चन्दर को बेचैनी महसुस होती है इसलिए वापस शाम को सुधा के यहाँ चला जाता है, तो सुधा खुद को कष्ट देने के लिए भरी दोपहर गैरेज में मोटर ठीक करती रहती है। चन्दर उसे डाँटना चाहता है लेकिन डाँट नहीं पाता है। चन्दर उसे कड़ी धुप में तकलीफ लेने की वजह पुछता है और जान जाता है कि वह अपना उदास मन बहलाने के लिए यह काम कर रही है। वह कहती है - "उन दिनों शायद किसी को प्यार करती रही होऊँ तभी कविता में मन लगता था।.... बड़ी फीकी, बड़ी बेजान, बड़ी बनावटी

लगती हैं ये कविताएँ, मन के दर्द के आगे सभी फीकी हैं। "[६] शाम को चन्दर के समझाने पर वह उसके साथ घूमने जाती है। वहाँ पम्मी की कविता सुनकर वह अचानक घर चल पड़ती है। दूसरे दिन उसे बुखार आ जाता है। बुखार में वह कुछ भी पागलों जैसी बातें करतीं है। चन्दर का उसके सामने रहना भी उसे सहन नहीं होता। लेकिन थोड़े समय के पश्चात वह ठीक हो जाती है। फिर चन्दर को अपने पास से दूर नहीं जाने देती और कहती है कि - "मैं जानती हूँ, तुम मुझे जितना स्नेह करते हो उसमें मेरी सभी दुर्बलताएँ घुल जाती हैं। लेकिन आज मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ चन्दर कि मुझे खुद अपनी दुर्बलताओं पर शरम आती है और आगे से मैं वैसी ही बनूँगी जैसा तुमने सोचा है चन्दर! "[७] फिर उसके बाद वह अपने चन्दर के प्रति प्रेम भी व्यक्त करती है और कहती है कि - "मैं भी समझती हूँ और तुम भी समझते हो। लेकिन यह न तुमसे छिपा है न मुझ से कि तुमने मुझे जो कुछ दिया है, वह प्यार से कहीं ज्यादा उँचा और प्यार से भी कहीं ज्यादा महान है। " [८] इतना कहती है लेकिन फिर भी वह दुःख से बाहर नहीं आ सकती। उसकी शादी की सब भाग-दौड़ चन्दर ही करता है। सुधा लोगों के सामने खुश रहने का नाटक करती है और अंदर ही अंदर टूटती रहती है। सुधा की शादी हो जाती है। बिनती बहुत रोती है और चन्दर बरदाश्त न कर सोने चला जाता है। सुधा बिदाई के वक्त चन्दर की पूजा करती है और घर को मानो पूरा खाली करवाकर चली जाती है। अब बिनती डा.शुक्ला के यहाँ ही रहती है। चन्दर भी कभी कभी डा.शुक्ला के यहाँ आता है। इसी बीच चन्दर को पीएच.डी.की डिग्री भी मिल जाती है - जिसके प्राप्त होने की प्रसन्नता सुधा के अभाव में फीकी पड़ जाती है। चन्दर पूरा टूट जाता है। इसके बारे में चंद्रकांता वर्मा कहती है - "कुछ भी हो इन्सान इन्सान को मार सकता है लेकिन वह खुद को नहीं मार सकता। चन्दर अपनी और सुधा की भावनाओं को आवेश में आकर कुचल देता है। लेकिन चाह कर भी हमेशा के लिए उसे दिल से नहीं निकाल पाता है। "[९]

सुधा का विवाह हो जाने से चन्दर के सारे आदर्श धराशायी हो जाते है। जो चन्दर नारी स्पर्श से भी पहले परेशान होता है, वही चन्दर अब पम्मी नामक अँग्लो-इंडियन युवती के साथ सम्बन्ध रखता है। उसकी शामें अब पम्मी के सरस सान्निध्य में बीतने लगती

हैं। दूसरी ओर सुधा भी अपने जीवन में चन्दर के अभाव में उदास हो जाती है। सुधा कैलाश की पत्नी होने की वजह से उसके साथ शारीरिक संबंध तो रख पाती है, पर मानसिक रूप से वह चन्दर की होकर रह जाती है।

चन्दर यथार्थ जिंदगी को समझने में धोखा खा गया है। सुधा जब कैलाश के साथ वापस मैके आती है, तब चन्दर एक सपना देखता है - उसमें वह सुधा का शरीर माँगता है। पर उसे आत्मग्लानि एवं धिक्कार के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता। चन्दर अपने जीवन से नाराज हो जाता है। वह सुधा से भी लिख देता है कि अब उसका उससे कोई संबंध नहीं है। वह उसे पत्र तक न लिखने को कहता है। उधर सुधा अंदर ही अंदर घुटती रहती है। वह खाना-पिना छोड़ देती है। इसी बीच बिनती का विवाह टूट जाने के कारण डा.शुक्ला और बुआ के सम्बन्ध बिघड़ जाते हैं।

अंत में गेसू का जीवन चरित्र चन्दर को अपने किये कृत्यों की ग्लानी हो जाती है। वह पुनः अपने आदर्श की ओर बढ़ता है। चन्दर अपने अपराध को स्वीकार करता है कि सुधा को खोकर वह स्वयं पूर्णतः बिखर गया है। लेकिन सुधा बड़े स्नेह से उसे बताती है कि वह अब भी चन्दर की है। चन्दर पुनः सुधामय हो जाता है, प्रेम की पावनता से ओत-प्रोत होकर भाव-मग्न हो जाता है। इस घटना के थोड़े दिनों के बाद चन्दर को दिल्ली से तार मिलता है, डा.शुक्ला ने उसे तुरन्त दिल्ली बुलाया है। चन्दर दिल्ली चला जाता है।

दिल्ली में जाकर वह देखता है कि सुधा की हालत बहुत खराब है। उसका गर्भपात हो गया है। बहुत खुन बह गया है। सुधा मरणासन्न अवस्था में है। वह बेहोशी में बार-बार चन्दर को पुकारती है। बहुत सारे इलाज करने पर भी सुधा बच नहीं पाती। मरने से कुछ क्षण पहले सुधा चन्दर को अपने पास बुलाती है। बिनती से कहती है - "मैं झुक नहीं सकती - बिनती यहाँ आ-हाँ-चन्दर के पैर छूँ... अरे अपने माथे में नहीं पगली मेरे माथे में लगा दे। मुझसे झुका नहीं जाता।"[१०] और सुधा के प्राणपखेरू उड़ जाते हैं। सुधा के अस्थियों एवं राख को प्रवाहित कर सुधा की इच्छा के कारण चन्दर बिनती

को अपनाता है। इसी के साथ उपन्यास का अंत हो जाता है। उपन्यास का अंत उपसंहार में स्पष्ट होता है।

मुख्य कथा के साथ-साथ बाकी तीन प्रासंगिक कथाएँ इस उपन्यास में आती हैं। इन कथाओं में प्रमीला डिकुस की कथा मुख्य कथा है। मुख्य कथा से पम्मी का प्रत्यक्ष संबंध रहा है।

पम्मी तथा बर्टी दोनों भाई-बहन इकठ्ठा जीवन व्यतीत करते हैं। चन्दर डा. शुक्ला के कार्य से जब पम्मी को मिलने जाता है तब चन्दर की पम्मी के साथ-साथ उसके भाई पागल बर्टी से भी मुलाकात होती है। बाद में चन्दर की विक्षुब्ध मानसिक अवस्था में वह उसे अपने शारीरिक आकर्षण और उद्दाम वासना से तृप्ति एवं संतोष प्रदान करती है। लेकिन चन्दर और पम्मी को सफलता नहीं मिलती है। विवाहित जीवन के वासनात्मक पहलु से घबराकर अपने पति को तलाक देकर पम्मी स्वयं को सुखी समझती है। वह विवाह से नफरत करती है। वही पम्मी बाद में स्वयं को जीवन के कटू अनुभवों के आधारपर परिवर्तित करती है और चन्दर को अंतिम पत्र भेजती है - "तुम बुरा न मानना। मैं तुमसे जरा भी नाराज नहीं हूँ।....अभी मैं साल-भर तक तुमसे नहीं मिलूँगी। मुझे तुमसे अब भी डर लगता है। अगला पत्र तुम्हें तभी लिखुँगी जब मेरे पति से मेरा समझौता हो जायेगा.... नाराज तो नहीं हो?"[११] पम्मी अपने पति के यहाँ चली जाती है। यहाँ तक पम्मी का कथांश इस उपन्यास में है।

दूसरी प्रासंगिक कथा है बुआ और बिनती की। बुआ बिनती की माँ है जो सदैव बिनती को कोसती है जिससे बिनती दुःखी है और वह जल्दी ब्याह करके ससुराल जाना चाहती है। लेकिन लड़का पंगु होने से बिनती का विवाह टूट जाता है। इसलिए बिनती आगे की पढ़ाई के लिए डा. शुक्ला के यहाँ रहती है।

बिनती के प्रति चंदर के आकर्षण का सर्वप्रथम कारण उसका सुधा से सम्बन्धित होना है। बिनती का महत्त्व सुधा के ससुराल चले जाने के बाद चन्दर के लिए बढ़ता है - "बिनती के आसुओं में चन्दर सुधा की तसवीर देखता था और बहल जाता

था। वह रोज शाम को आता और बिनती से सुधा की बातें करता, जानें कितनी बातें, जाने कैसी बातें और बिनती के माध्यम से सुधा में डुबकर चला आता था।.....इसलिए बिनती उसकी एक जरूरत बन गयी थी।"[१२] दूसरी ओर बुआ डा.शुक्ला के साथ झगड़ा करके संन्यास लेकर चली जाती है। सुधा की मृत्यु के बाद सुधा के वचन के अनुसार चन्दर सुधा की राख से बिनती की माँग भर देता है और उसे अपनाता है। यहाँ तक बिनती की कथा है।

प्रासंगिक कथा के रूप में जो तिसरी कथा है वह गेसू की कथा है। जो छोटासा कथांश है। गेसू सुधा की एक अच्छी सहेली है। गेसू अख्तर से प्रेम करती है। गेसू जो स्वयं जीवन के विष का पान करती है। अख्तर गेसू से प्रेम करता है लेकिन गेसू की छोटी बहन फूल से शादी करता है। गेसू ने जो अख्तर के साथ सपने देखे थे, वे सपने चूर-चूर हो जाते हैं। अख्तर ने गेसू से दुत्कारने पर भी गेसू उसे नफरत नहीं करती। गेसू जिंदगी भर नर्स की नौकरी करके अपना प्यार जताती है - "सारा सपना ताश के महल की तरह गिर गया, और परिस्थितियों से नहीं। खुद अख्तर ने धोखा दिया, लेकिन गेसू है कि माथे पर शिकन नहीं, भौंह में बल नहीं। होठों पर शिकायत नहीं।"[१३] गेसू अविवाहित रहती है। यहाँ गेसू आदर्श प्रेमिका के रूप में प्रस्तुत हुई है। इसलिए गेसू का अपना एक अलग महत्त्व इस उपन्यास में हम देखते हैं। यहाँ गेसू की कथा समाप्त होती है।

"गुनाहों का देवता" उपन्यास का कथानक सामाजिक है। इसमें भारती जी ने नर-नारी के प्रेम-सम्बन्धों को विभिन्न दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। "गुनाहों का देवता" की कथा भावमयी, अश्रु-सिंचित तथा माधुर्य-मंड़ित है। कथा का आरंभ एवं अंत स्पष्ट है। चन्दर तथा सुधा के पारस्पारिक प्रारम्भिक आकर्षण से कथा का आरंभ होता है। सुधा का कैलाश से विवाह यह मध्य माना जा सकता है तथा सुधा की मृत्यु इस उपन्यास का अंत मानना चाहिए। क्योंकि सुधा की अंतिम इच्छा से ही चन्दर बिनती को अपनाता है। चन्दर बिनती को अंत में कहता है - "चुप हो जाओ रानी! मैं अब इस तरह कभी नहीं करूँगा - उठो। अब हमी दोनों को निभाना है बिनती!"[१४]

इस उपन्यास के मुख्य पात्र है चन्दर और सुधा। इनकी कथा मुख्य कथा है। इस कथा को प्रत्यक्ष योग देनेवाले पात्रों में कैलाश, डा.शुक्ला, बिनती हैं। चन्दर के चरित्र को उद्घाटित करने में सुधा तथा बिनती के साथ ही गेसू तथा पम्मी का प्रत्यक्ष योगदान रहा है। बर्टी के माध्यम से चन्दर पर एक अलग प्रभाव पड़ता है। बर्टी प्यार में असफल होने पर भी अपने जीवन से पुनः शादी करके समझौता कर लेता है। इसका जिक्र लेखक जी ने किया है और चन्दर को आदर्श बनाया है। - "गुनाहों का देवता" नाम की सार्थकता प्रतिपादित करने के लिए लेखक ने अनेक पात्रों के मुख से चन्दर के लिए "देवता" शब्द का प्रयोग करवाया है।"[१५]

भारतीजी ने मुख्य कथा में सुधा और चन्दर की कथा, साथ-साथ बुआ और बिनती, गेसू की घटना, बर्टी और पम्मी की कथा आदियों पर प्रकाश ड़ाला है। इसमें गेसू की कथा और बर्टी-जेनीकी प्रासंगिक कथा जो बीच में आकर बीच में ही लुप्त हो जाती है। मुख्य कथा में चन्दर और सुधा दोनों के जीवन में उदासिनता की पराकाष्ठा दिखलायी है। सुधा की शादी कैलाश से होने पर वह कैलाश के साथ शारीरिक संबंध तो रख पाती है, पर मानसिक रूप से वह चन्दर की होकर रह जाती है। यहाँ सुधा के जीवन में विवाह सम्बन्ध एक समस्या बन जाती है। जिसके कारण उसका जीवन पीड़ा, सिसकियों का पूँज बन जाता है। चन्दर को सुधा के अभाव में जीवन व्यर्थ प्रतीत होता है। चन्दर सुधा के अभाव में पम्मी को अपनी बाहुपाश में आबद्ध करना चाहता है, लेकिन वहाँ भी सुख नहीं पाता। उसे अपना जीवन पूर्णतः अर्थहीन लगता है।

भारती जी ने शहर से लेकर ग्रामीण आँचलिकता का भी विवरण किया है। सुधा को शहर में लाते है क्योंकि गाँववाले उसकी शादी पर जोर दे रहे थे। इसलिए डा.शुक्ला ने उसे इलाहाबाद बुलाकर आठवें में भरती किया। इससे मालूम हो जाता है कि नारी की शिक्षा को देहात में महत्त्व नहीं था। साथ ही बुआ भी एक ग्राम्य नारी है। जो अंधश्रद्धाओं पर ज्यादा विश्वास करती है। बिनती को बार-बार कोंसना उसका स्वभाव ही बन गया था। एक स्थान पर भारतीजी ने बिनती के मुँह से देहाती लड़कियों पर गंदा आक्षेप लगवाया है। वह उचित नहीं लगता। बिनती कहती है - "देहाती लड़कियाँ शहर की लड़कियों से ज्यादा

होशियार होती हैं.... वहाँ इतना दुराव, इतना गोपन नहीं है। .... ब्याह के पहले ही वहाँ लड़कियाँ सब कुछ.....[१६] यह बात योग्य नहीं लगती।

भारती जी "प्रेम" और "पत्नीत्व" की तुलना करते हुए पम्मी के मुख से "पत्नीत्व" को सर्वोच्च स्थान देते हैं। पम्मी अपने पति के पास लौटकर चन्दर को पत्र लिखती है - "प्यार से मेरा विश्वास जैसे उठा जा रहा है, प्यार स्थायी नहीं होता। पत्नीत्व स्थायी होता है।"[१७] गेसू ने अख्तर से प्रेम किया। उसका प्यार टूट गया। फिर भी उसके मन में अख्तर से नफरत वगैरे की भावना छू तक नहीं गयी है। यहाँ प्रेम का उदात्त रूप दिखायी देता है। गेसू अनंत प्रेम की निराली प्रतिमा है। इस प्रकार दमित काम वासना और अतृप्ति को केंद्र में रखकर ही पात्रों का प्रणयन किया गया है। उपन्यास का कथानक यशस्वी बन गया है।

कथ्य बिना कोई भी रचना नहीं बन सकती। धर्मवीर भारती के यह उपन्यास लिखने के पीछे भी कई उद्देश्य रहे हैं। इनका मूल उद्देश्य "प्रेम" सम्बन्धी विभिन्न मतों का आकलन करना है, जिसे हम अपने समाज में वर्षों से देखते आ रहे हैं। भारती जी ने "गुनाहों का देवता" उपन्यास में विभिन्न युगलों की स्थापना कर स्त्री-पुरूष सम्बन्धों के विविध कोनों को उजागर करने की कोशिश की है। इस उपन्यास की सभी घटनाएँ, लेखक का विश्लेषण और परिवेश चित्रण सब जिस उद्देश्य की ओर उन्मुख हैं, वह है नर-नारी सम्बन्धों का निरूपण, मानवीय सम्बन्धों में सेक्स की उपयोगिता और अनिवार्यता का निरूपण इसप्रकार वासना और भावना, सेक्स और प्रेम, प्रेम और विवाह आदि विभिन्न आयामों को प्रस्तुत करना ही उपन्यास का कथ्य रहा है। साथ ही नारी के अंतरंग को खोलकर उसका चित्रण सुधा और गेसू जैसी आदर्श प्रेमी नारियों को दिखाना यह भी उपन्यासकार का उद्देश्य रहा है। भारती जी ने प्रेम के विविध पहलुओं का चित्रण कर आदर्श एवं त्यागपूर्ण प्रेम के महत्त्व को प्रस्थापित किया है। गेसू के ही कारण उपन्यास का नायक चन्दर जो पथभ्रष्ट हो गया था, जो सुधर जाता है।

साथही भारती जी ने मध्यवर्गीय लोगों की प्रवृत्ति और विड़म्बना दिखायी

है। उपन्यास में रूढ़ी-परंपराओं की व्यर्थता को दिखाया है और उनमें सुधार करने का प्रयास किया है। साथ ही भारती जी ने उस काल की नारी के शैक्षणिक स्थिति पर भी प्रकाश डाला है।

उपन्यास में पहले पम्मी का नैतिक पतन गिराया हुआ दिखाया है, परंतु बाद में वह अपने पति के पास चली जाती है। यहाँ भारती जी ने भारतीय नारी के नैतिक आदर्श की रक्षा की है और पम्मी, बर्टी आदि पात्रों के माध्यम से मानवी मूल्यों का विघटन दिखाया है। समाज की समस्याओं का चित्रण कर समाजसुधार के प्रति लोगों को प्रेरित करना आदि में उपन्यासकार भारती सफल हुए हैं।

ख) <u>सूरज का सातवाँ घोडा</u> :-

धर्मवीर भारती जी का "सूरज का सातवाँ घोडा" अनेक कहानियों में एक कहानी के रूप में प्रस्तुत किया गया उपन्यास है। कहानियों की संख्या छह है। ये सभी कहानियाँ निम्न-मध्य वर्ग की सामाजिक, नैतिक, वैचारिक विषमता का चित्रण करती है। उसी में उपन्यास का कथ्य छिपा है। इस विषमता के चित्रण के लिए ही भारतीजी ने छह कहानियों के माध्यम से मध्यवर्गीय पात्रों के विभिन्न दृष्टिकोण, परिस्थितियों और पहलुओं को सामने रखा है।

प्रारम्भिक "उपोद्घात" में माणिक मुल्ला का परिचय दिया है। माणिक मुल्ला मुहल्ले के प्रसिद्ध व्यक्ति है और वे अकेले रहा करते हैं। उनके घर दूसरा कोई नहीं है। वही दोपहर को लड़कों का अड्डा जमता हैं। वहाँ बैठकर माणिक मुल्ला सभी लड़को को कहानियाँ सुनाया करते हैं।

"पहली दोपहर" की बैठक में माणिक ने जो कहानी सुनायी उसका शीर्षक है - "नमक की अदायगी" अर्थात जमुना का नमक माणिक ने कैसे अदा किया। इसके अंतर्गत लेखक ने माणिक के नादान बचपन और जमुना के कुंठित यौवन के बीच क्रमशः विकसित होते सम्बन्ध को दिखलाया है। इसमें बीस वर्षीय जमुना पंद्रह वर्ष के माणिक

से प्रेम करती है। माणिक इसे कहानी की किताबें देता है। साथ ही वे दोनों एक-दूसरे को मिलते हैं। जमुना माणिक को नमकीन पुए खिलाकर अपने पास बिठवाती है तथा बातचीत करती है। बाद में माणिक नहीं मानते तो वह माणिक को नमक के बदले में प्रेम अदा करने के लिए धमकाती है।

माणिक के पहले वह तन्ना की प्रेमिका थी। तन्ना और जमुना दोनों भी मध्यवर्गीय पात्र है। दोनों एक-दूसरे को चाहते हैं। लेकिन जाति-उपजाति के विष से सींची हुई सामाजिक परम्परा के कारण जमुना का विवाह तन्ना से नहीं होता है। वह बहुत दुःखी होती है। बाद में माणिक के साथ प्रेम करती है और माणिक को भी पाना चाहती है। अंत में यहाँ भी असफल हो जाती है और उसका विवाह किसी दूसरे स्थान होता है।

दूसरी कहानी "दूसरी दोपहर" में बतायी जाती है जो पहली कहानी को आगे बढ़ाती है। इस कहानी का नाम है "घोडे की नाल"। अर्थात किस प्रकार घोड़े की नाल सौभाग्य का लक्षण सिद्ध हुई यह बताया है। इसमें जमुना का विवाह ताँगेवाले से अनैतिक सम्बन्ध एवं उसके वैधव्य की चर्चा की है। आर्थिक अभाव के कारण जमुना का विवाह एक वृद्ध एवं तिहाजू जमींदार के साथ होता है। जमुना पुत्र-प्राप्ति के लिए पूजा-पाठ करती है। लेकिन कुछ फायदा नहीं होता इसलिए रामधन ताँगेवाला उसे इलाज बताता है कि - "जिस घोड़े के माथे पर सफेद तिलक हो, उसके अगले बाये पैर की घिसी हुई नाल चन्द्र-ग्रहण के समय अपने हाथ से निकालकर, उसकी अँगूठी बनवाकर पहन ले तो सभी कामना पूरी हो जाती हैं।"[१८] धनी और संपन्न पति मिलने पर भी उसकी कामभावना अतृप्त रह जाती है और वह अतृप्ति ही उसके नैतिक पतन का कारण बनती है। पुत्र प्राप्ति में घोड़े की नाल और रामधन का विशेष महत्त्व है। जमुना ने रामधन के साथ अनैतिक संबंध रखने से उसे पुत्र प्राप्ति होती है। इसके बाद तुरंत ही उसके पति की मृत्यु हो जाती है। जमुना विधवा बन जाती है। और रामधन उसकी कोठी में रहने लगता है। - "आज के निम्न-मध्यवर्ग के युवा-जगत् की अर्थ और कामभावना की अतृप्ति की समस्या अत्यधिक भीषण है। उसके जीवन में अर्थ और काम दोनों का अभाव है और वस्तुतः ये दोनों एक दूसरे के पूरक है। अतः मध्यवर्गीयों को इन्हें प्राप्त करने के लिए किस प्रकार प्रतित होना

पड़ता है, इसका जीता-जागता उदाहरण जमुना का चारित्रिक अवनति है।"[१९]

तीसरी कहानी "तीसरी दोपहर" में बतायी जाती है। तीसरी कहानी का शीर्षक नहीं बताया है। यह कहानी तन्ना और जमुना के सम्बन्धों से उत्पन्न मानसिक स्थिति से सम्बन्ध है। इसमें जमुना के प्रिय साथी तन्ना, जिसके साथ वह विवाह की सुखद कल्पनाएँ किया करती थी और जिससे बात करने में उसे बड़ा आनंद मिलता था। उनके दुःखद जीवन की कहानी कहीं गयी है। तन्ना के पिता महेसर दलाल पत्नी की मृत्यु के बाद एक औरत घर में लाते हैं। उसके प्रभाव से लड़के-लड़कियों पर शासन कठोर हो जाता है। भुखे रहकर, मार खाकर तन्ना जमुना की सहानुभूति से अपना दुःख भुलाते है। दोनों के विवाह की बात टूट जाती है। तन्ना का विवाह एक इन्टर पास लड़की लीली से हो जाता है। घर में रखी हुई बुआ नामक जो औरत थी वह तन्ना के माँ के सभी जेवर ले के भाग जाती है।

महेसर दलाल पर साबुनवाली लड़की के खून का आरोप है। इसलिए वह पुलिस के ड़र से भाग जाता है। पुरी ग्रहस्थी का भार आर.एम.एस. के एक साधारण क्लर्क तन्नापर पड़ता है। उसे ज्यादा कष्ट होने की वजह से वह बीमार पड़ जाता है और उसकी नौकरी छुट जाती है, इसलिए तन्ना की सास तन्ना की पत्नी को सदा के लिए मैके ले आती है। बाद में जब युनियन वालों के प्रयत्न से फिर नौकरी लगती है। एक बार दुबले शरीरवाले तन्ना टंकी की झुलती हुई बाल्टी से टकरा कर रेलगाड़ी से गिर जाते है। उनकी दोनों टांगे कट जाती है और अस्पताल में उनकी मृत्यु हो जाती है।

चौथी कहानी "चौथी दोपहर" में बतायी जाती है। इस कहानी का शीर्षक है 'मालवा की युवरानी देवसेना' की कहानी। इसमें माणिक और लीली के रूमानी प्रेम का वर्णन है। लीली भावुक पात्र है - वह पढ़ी-लिखी है। लीली माणिक को अपनाना चाहती है। लेकिन माणिक की कायरता और झूठी मान-मर्यादाओं की भय से उनका प्रेम असफल हो जाता है और लीली की शादी तन्ना से हो जाती है। - "इसमें युवा-जगत् में पनपनेवाली प्रेम की स्थिति का चित्रण करता है, किन्तु नैतिक साहस के अभाव के कारण वे उसे यथार्थ जीवन में उतार नहीं पाते और वह प्रेम इन मध्यवर्ग के युवक-युवतियों के

लिए केवल कल्पनाा की वस्तु बनकर रह जाता है। "[२०]

पाँचवी कहानी "पाँचवी दोपहर" में बतायी जाती है। इसका शीर्षक "काले बेंट का चाकू" है। इस कहानी की नायिका सत्ती है। जो पहिया छाप साबुन के मालिक चमन ठाकुर की पोषिता कन्या है। उसके रहन-सहन में एक अलग विलासिता है। लोग उसके साथ जितना अच्छा बर्ताव करते हैं उतना ड़रते भी हैं - "सभी लोग अच्छी तरह जानते थे कि अगर कोई उसकी तरफ वैसी निगाह से देखता तो वह आँखे निकाल सकती है और उसकी कमर में एक काले बेंट का चाकू हमेशा रहा करता था। "[२१]

सत्ती माणिक को एक विश्वासु मित्र मानती है। साथही वह उससे अत्यधिक प्रेम करती है। दोनों भी युवा हैं। बुजुर्गों को यह प्रेम पसंद नहीं है। चमन ठाकूर की बुरी नजर सत्ती पहचानती है। महेसर दलाल ने इसी लड़की को अपनी काम-वासना की तृप्ति के लिए खरीद लिया है। जिसका सत्ती प्रतिरोध करती है। चमन ठाकूर और महेसर दलाल से बचने के लिए सत्ती एक रात अपना सब कुछ लेकर माणिक के घर चली जाती है किंतु मर्यादा-भीरू और ड़रपोक माणिक यह खबर अपने भाई को देता है। माणिक का भाई सत्ती को चमन के हवाले कर देता है। दूसरे दिन चमन और सत्ती कहीं गाँव में दिखायी नहीं देते। गाँव में यह बात फैल जाती है कि सत्ती की मौत की गयी है, जिससे माणिक अत्यंत दुःखी हो जाता है।

"छठी दोपहर" में छठी कहानी बतायी जाती है। पाँचवी कहानी का उत्तरार्ध ही छठी कहानी में विवेचित है। सत्ती की मृत्यु की अनुमान से माणिक को बहुत दुःख होता है। - "उनका स्वास्थ बुरी तरह गिर गया था, पर उन्हें संतोष था क्योंकि वे सत्ती की मृत्यु का प्रायश्चित कर रहे थे। उनकी आत्मा को, उनके व्यक्तित्व को और उनकी प्रतिभा को सुतक लगा हुआ था। "[२२]

ऐसेही एक दिन जब वे चाय-घर से निकल रहे थे तो उन्होंने देखा कि एक लकड़ी की गाड़ी में चमन ठाकूर बैठा है और सत्ती गोद में भिनकता बच्चा लिये, गाड़ी खींचते चली आ रही है। माणिक को देखते ही सत्ती का हाथ कमर पर गया, शायद चाकू

की तलाश में पर चाकू न पाकर उसने फिर प्याला उठाया और फिर खून की प्यासी दृष्टि से माणिक को देखते हुए आगे बढ़ गयी। सत्ती को जीवित देखकर माणिक के हृदय का बोझ उतर गया और उन्होंने तन्ना के रिक्त स्थान पर आर.एम.एस.में नौकरी पकड़ ली।

"सातवी दोपहर" में जो कहानी सुनायी उसका शीर्षक है "सूरज का सातवाँ घोडा" अर्थात वह जो सपने भेजता है। इसमें माणिक ने सूरज के सात घोड़ों का तात्पर्य स्पष्ट किया है। इसमें सभी कथाओं का केन्द्रीकरण तथा भविष्य के प्रति आस्थामय और मुखरित हुए है। बाकी छः घोडे यदि दुर्बल, रक्तहीन और विकलांग हो भी गये हैं तो भी निराश नहीं होना चाहिए - "सातवाँ घोडा तेजस्वी और शौर्यवान है और हमें अपना ध्यान और अपनी आस्था उसी पर रखनी चाहिए।"[२३] इस तरह सूरज के सात घोड़ों का तात्पर्य स्पष्ट किया है यहाँ तक "सूरज का सातवाँ घोडा" का कथानक है।

"सूरज का सातवाँ घोडा" यह भारतीजी का एक नये ढ़ंग का उपन्यास है। इस उपन्यास की रचना अपेक्षाकृत यथार्थवादी रचना है। शिल्प की दृष्टि से इस रचना में कई नवीनताएँ हैं, अभिनव प्रयोग किये है। पुरानी धर्म-कथाओं में सुनाये जानेवाले किस्सों की पद्धति को अपनाया गया है। यह उपन्यास अपने आप में सात कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास का आरंभ "उपोद्घात" से होता है। जिसमें भारती जी ने पाठकों को प्रधान पात्र के रूप में "माणिक मुल्ला" से परिचय करवाया है।

इस उपन्यास के पात्रों में एक ओर घोर सामाजिक और आर्थिक विषमता है तो दूसरी ओर कामवासना का प्रबल और विकृत रूप। उपन्यास के कथानक में आरम्भ से अंत तक एकरसता दिखायी देती है। केवल "सातवी दोपहर" वाला अध्याय जोड़ा हुआ लगता है। उपन्यासकार ने माणिक के रूप में जिन सात घोडों की कल्पना करते हुए माणिक की कथा बताई है वह स्वयं उपन्यासकार की कथा लगती है, जिन्हें वह उपन्यास के अंत में स्पष्ट करते हैं। वैसे सभी कहानियाँ प्रेम कहानियाँ लगती हैं, लेकिन यहाँ प्रेम कहानियाँ मात्र एक माध्यम है, जिनकी आड़ में समाज के यथार्थ को प्रस्तुत किया गया है।

कथानक में आरोह-अवरोह तथा संघर्ष की स्थिति तो विद्यमान है, किन्तु वह सुत्र-बद्ध-सी नहीं दिख पड़ती। भारती जी की यह विवशता भी है क्योंकि थोड़े से कथानक में उसे संपूर्ण युग या मध्यवर्गीय पात्रों की अर्थ तथा कामसम्बन्धी सभी स्थितियों का चित्रण करना आवश्यक था। अतः वे स्वयं निवेदन में स्वीकार करते हैं - "बहुत छोटे-से चौखटे में काफी लम्बा घटना-क्रम और काफी विस्तृत क्षेत्र का चित्रण करने की विवशता के कारण यह ढ़ंग अपनाना पड़ा है।"[२४]

उपन्यास की सभी कहानियाँ परस्पर अनुस्यूत हैं। सभी एक-दूसरे की पूरक तथा विकासिका है। प्रत्येक कहानी में घटना का पूर्व-संकेत किया गया है, बाद में उसका विस्तार किया गया है। लेखक की सांकेतिकता पाठक को कथानक में रमाने में और उसमें कौतुहल बनाये रखने में सफल रही है।

माणिक मुल्ला जीवनधारा से कटा हुआ उदासीन व्यक्ति है। वह तटस्थ होकर सब पर मीठी चुटकियाँ लेने की स्थिति में है और व्यंग्य उसके लिए और उसे भुलाने का सशक्त माध्यम बन जाता है। वस्तुस्थिति के स्वीकार में आधुनिकता का बोध उजागर होता है। उसकी असफलता प्रेम की है। इस लघु उपन्यास में माणिक मुल्ला के माध्यम से लेखक ने पुरानी मान्यताओं की आलोचना की है। उसके जीवन में तीन नारियाँ आती है और तीनों ही अपने-अपने स्वभाव और बोध को उजागर करती है। जमुना अधपक और कुंठित है, लीली भावुक और आधुनिक का विचित्र मिश्रण है, सत्ती हाथ से परिश्रम करनेवाली स्वाधीन और खुले स्वभाव की है - "जमुना की दृष्टि सामंत है, लीली आधुनिक होने की दम भरती है और सत्ती शायद भावी दृष्टि का संकेत देती है।"[२५] इसतरह सूरज का सातवाँ घोडा" में अनेक कहानियों में एक कहानी है, जो समाज के खोखलेपन की आलोचना है।

अर्थ और काम के इर्द-गिर्द घूमने वाले निम्नमध्यवर्गीय जीवन का विड़म्बनात्मक चित्रण करना भारती जी का उद्‌देश्य रहा है। अतः सभी पात्र, कहानियाँ और शिल्पगत विशेषताएँ उद्‌देश्य के सहायक रूप में ही चित्रित हुई हैं। छह कहानियों के माध्यम से भारती

ने निम्न-मध्यवर्ग के सामाजिक जीवन के विविध पक्षों को उजागर किया है। ऊपरी तौर पर ये सभी कहानियाँ प्रेम कथा-सी लगती हैं। किंतु वह भारती जी का मूल स्वर नहीं है। बल्कि आज के निम्न-वर्ग में जो आर्थिक संघर्ष, नैतिक विश्रृंखलता, अनाचार निराशा, कटूता और अंधेरा मध्यवर्ग पर छाया है, उसको उजागर किया है। वास्तव में भावना से विरक्ति और वासना में आसक्ति एवं दोनों में मोहभंग की जो घनी अनुभूति मिली, इसका चित्रण उपन्यास का मूल उद्देश्य है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक आश्वासित करते हैं कि आनेवाले युग में अपनी मजबुरियों से छुटकारा पाने का मनुष्य जाति को स्वर्ण अवसर मिलने वाला है, किन्तु उसके लिए यह भी जरूरी है कि हम मिलकर उस सपने को साकार करने में लग जायें। - "घोड़ा शक्ति का प्रतीक है। इसलिए आधुनिक यंत्र शास्त्र में "हॉर्स-पॉवर" शब्द का प्रयोग किया जाता है। दूसरी ओर "सूर्य" प्रकाश का प्रतीक है एवं "सातवाँ" आदर्श की चरम पराकाष्ठा को ज्योतित करने वाली संख्या है।"[२६]

अंत में कहा जा सकता है कि "सूरज का सातवाँ घोडा" अपने पूरे आयामों में सफल होने के साथ कथ्य की दृष्टि से भी भारती की अनुपम एवं अनूठी कृति है।

निष्कर्ष :

उपन्यास का कथानक ही उपन्यास है। उपन्यासकार का उपन्यास लिखने के पिछें कुछ न कुछ हेतु होता है। हेतु ही कथ्य है। वह हेतु याने कथ्य सफल होने के प्रयास में उपन्यासकार रहते हैं। कथ्य उपन्यास का मूल तत्त्व है। किसी उदात्त एवं अनुदात्त कथ्य की पृष्ठभूमि में ही उपन्यास की कला सार्थक बनती है। साथही अपने उपन्यास के कथ्यद्वारा उपन्यासकार जीवन संदेश भी देते हैं।

धर्मवीर भारती जी की उपन्यासों का मुख्य कथ्य है - स्त्री-पुरूषों के अंतर्बाहय संबंधों को परखना। इसके साथही भारती जी का और एक उद्‌देश्य है कि प्रेम के विविध पहलुओं को चित्रण कर आदर्श प्रेम के महत्त्व को प्रस्थापित करना। उन्होंने उपन्यासों के माध्यम से "मानवी मूल्यों का विघटन" का चित्रण किया है और समाज की समस्याओं का चित्रण करके समाज-सुधार के प्रति लोगों को प्रेरित करने का भी आपका उद्‌देश्य रहा है।

धर्मवीर भारती जी ने व्यक्ति को अतीत एवं वर्तमान जीवन भूलकर भविष्य के आस्था का संदेश दिया है। जो आनेवाले भविष्य का जीवन सुखमय होगा। इसतरह धर्मवीर भारती जी ने दोनों उपन्यासों में मध्यवर्गीय समाज के परिस्थितिवैषम्य, रूढ़िग्रस्त तथा विकृतियों का निरूपण करने का प्रयत्न किया है। धर्मवीर भारती जी के उपन्यास कथ्य की दृष्टि से अनुपम एवं अनूठी कृति है।

-o-o-o-o-

## संदर्भ ग्रंथ


१. डा.प्रतापनारायण टंडन : "हिंदी उपन्यास उद्भव और विकास", पृ.४६-४७

२. डा.हुकुमचंद राजपाल : "धर्मवीर भारती : साहित्य के विविध आयाम", पृ.१३४

३. डा.धर्मवीर भारती : "गुनाहों का देवता", पृ.११

४. डा.एन.के.जोसफ : "हिंदी उपन्यासों में व्यक्तिवादी चेतना", पृ.१३२

५. डा.धर्मवीर भारती : "गुनाहों का देवता", पृ.१३७

६. वही : वही, पृ.१४२

७. वही : वही, पृ.१५६-१५७

८. वही : वही, पृ.१५७

९. डा.चंद्रकांता वर्मा : "डा.धर्मवीर भारती के गद्य कृतियों का अनुशीलन", पृ.३१

१०. डा.धर्मवीर भारती : "गुनाहों का देवता", पृ.३४८

११. वही : वही, पृ.२८५-२८६

१२. वही : वही, पृ.१९६

१३. वही : वही, पृ.२७१

१४. वही : वही, पृ.३५१

१५. डा.हुकुमचंद राजपाल : "धर्मवीर भारती : साहित्य के विविध आयाम" , पृ. १३५

१६. डा.धर्मवीर भारती : "गुनाहों का देवता", पृ.२२९

१७. वही : वही, पृ.२८४

१८. डा.धर्मवीर भारती : "सूरज का सातवाँ घोडा", पृ.४१

१९. डा.चंद्रभानु सोनवणे : "हिंदी उपन्यास : विविध आयाम", पृ.११५

२०. वही : वही, पृ.११६

२१. वही : वही, पृ.७९

२२. वही : वही, पृ.९४